>

Title : Need to check adulteration in milk and use of chemicals in fruits and vegetables.

श्री राकेश सिंह (जबलपुर): अध्यक्ष महोदया, मैं सरकार का ध्यान एक महत्वपूर्ण विषय की ओर दिलाना चाहता हूं। जहां एक और सरकार देश की जनता पर अरबों रुपया खर्च कर रही है, विशेषकर बच्चों के स्वास्थ्य पर , वहीं दूसरी ओर बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो अमानवीयता की हद तक जा रहे हैं। दूध जैसी वस्तु, जिसे हम पौष्टिक मानते हैं, वहां दूध भी नकली बन रहा है। इसको बनाने में यूरिया और अन्य कैमिकल्स का उपयोग हो रहा है। जो दूध नकली नहीं है, वह भी जनता की नजरों में और बच्चों के लिये ज़हर साबित हो रहा है। क्योंकि आक्सीटोसिन नाम के इंजैक्शन का उपयोग जानवरों के लिये किया जा रहा है, तब उनका दूध निकाला जाता है। यह एक ऐसा हॉरमोन है जिसका अधिक उपयोग मस्तिष्क की ग्रन्थियों पर विपरीत और हानिकारक असर डालता है। घी बनाने में भी हड्डियों का चूरा और जानवरों की खाल और उसके मांस में से चर्बी निकालकर उसका उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार फल और सब्जियां भी सुरक्षित नहीं हैं। सब्जियों का आकार बढ़ाने के लिये...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप केन्द्र सरकार से क्या चाहते हैं, वह संक्षेप में बताइये।

श्री राकेश सिंह : अध्यक्ष महोदया, यह एक महत्वपूर्ण विषय है। मैं यह विषय पिछले 15 दिनों से उठाना चाह रहा था। सब्जियों का आकार बढ़ाने के लिये विभिन्न तरह के इंजैक्शनों का उपयोग हो रहा है। फलों को पकाने और अधिक समय तक बाजार में रखने के लिये अलग अलग तरह के रसायनों का उपयोग हो रहा है। खोया भी नकली आ रहा है। सब से बड़ी बात जो मैं बताना चाहता हूं, वह यह है कि सिर्फ मुझे नहीं मालूम बल्कि अलग अलग समाचार पत्रों के माध्यम से और विभिन्न इलैक्ट्रोनिक साधनों के माध्यम से पूरे देश की जनता ने इसे अनेकों बार देखा है। इसके बाद भी केन्द्र की सरकार मौन क्यों है? आखिर तब तक इस महत्वपूर्ण विषय को हम राज्यों पर छोड़ते रहेंगे?

अध्यक्ष महोदया, मेरा आपके माध्यम से केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि इस संबंध में कोई कड़ा कानून बनायें और विशेष रूप से दूध जैसी वस्तु को आवश्यक वस्तु अधिनियम में शामिल करें ताकि उसके मूल्य पर भी नियंत्रण हो सके और उसकी गुणवत्ता पर भी हम ध्यान दे सकें।